Class-XII

Hindi Elective(002)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

खण्ड - 'क'

कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन

Question - 3

Answer - क (a)

किसी भी कहानी में संवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संवाद कहानी का एक प्रमुख तत्व है जो कहानी को गति प्रदान करता है उसे व्याख्यात्मकता बनाता है। पात्र संवाद के ज़रिए कहानी को आगे बढ़ाते हैं। संवाद के ज़रिए हमें कहानी का उद्देश्य, उसके पात्रों का चरित्र-चित्रण, भाषा-शैली, परिवेश का बोध होता है। पात्रों के द्वारा की जाने वाली ~~पात्रों के संवाद लिख~~ विचारों की अभिव्यक्ति, घटनाक्रम ही संवाद हैं।

पात्रों के संवाद लिखते समय कहानीकार को निम्न बातें ध्यान रखना चाहिए –

(i) पात्रों का संवाद उनके चरित्र, स्वभाव के अनुकूल होना चाहिए।

(ii) संवाद की भ सरल, सहज, स्पष्ट व स्वाभाविक होनी चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(iii) संवाद रोचक होना चाहिए। उसमें नीरसता, उबाऊपन पाठक या श्रोता वर्ग को कहानी के प्रति दिलचस्पी लाने से रोकता है।

(iv) पात्रों का चरित्र-चित्रण भी कहानीकार संवाद के ज़रिए करवाते हैं जो कहानी को आकर्षक बनाता है।

Answer (ख) (a)

कहानी के कथानक में 'द्वन्द्व' एक महत्त्वपूर्ण एवं रोचक अंग होता है जिसके बिना कहानी अधूरी एवं उबाऊ लगने लगती है। वास्तव में, द्वन्द्व ही अलग-अलग व्यक्तियों की अलग-अलग विचारधारा, भिन्न-भिन्न क्रियाकलापों को प्रस्तुत करता है। यदि दो व्यक्ति एक ही विचारधारा रखते हैं तो कहानी को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता क्योंकि व्यक्तियों की किसी विषय पर राय समान है। परंतु परस्पर विपरीत राय रखने वाले व्यक्ति आपस में तर्क-वितर्क, पक्ष-विपक्ष, विरोध करके कहानी को रोचक, एवं गति प्रदान करते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question - 4

Answer - (क) (a)

समाचार-पत्रों या लेखन के विभिन्न माध्यमों के ज़रिए पत्रकार द्वारा अपने पाठकों तक किसी विषय की जानकारी देना, उन्हें शिक्षित करना, उनका मनोरंजन करना पत्रकारीय लेखन कहलाता है।

पत्रकारीय लेखन, साहित्यिक एवं सृजनात्मक लेखन से भिन्न होता है ① यहाँ पत्रकार को लेखन करते समय अनुशासित होकर सही एवं सटीक जानकारी पाठकों को देनी होती है। जबकि सृजनात्मक लेखन में कल्पनाओं के अनुसार, लेखन किया जा सकता है। ② पत्रकारीय लेखन में तथ्यों एवं विषय की स्पष्ट एवं संपूर्ण जानकारी पाठक तक पहुँचाना होता है। लेखन करते समय एक ही निश्चित ढाँचा में ही समाचार देना होता है जबकि सृजनात्मक लेखन में लेखक को खुली छूट होती है।

Answer - (ख) (b)

विशेष लेखन के अंतर्गत अनेक क्षेत्र आते हैं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक, सिनेमा, राजनीति, देश - विदेश, रक्षा, खेल-जगत इत्यादि।

खेल - जगत के विषय में लेखन करते समय संवाददाता को उस विषय की पूर्ण - जानकारी एवं रूचि होनी चाहिए। खेल में प्रयुक्त शब्दावली से संवाददाता भली-भाँति परिचित होना चाहिए जैसे - कैच आउट, नॉ बॉल इत्यादि। इस क्षेत्र में विशेषता हासिल करने के लिए (1) खेल जगत में रूचि होना चाहिए। (2) अच्छे एवं भूतपूर्व खिलाड़ियों द्वारा बनाए गए रिकॉर्ड याद होना चाहिए। (3) साक्षात्कार के माध्यम से ज्ञानवर्धन किया जाता है। खेल से जुड़े व्यक्तियों के संपर्क में रहने, खेल से संबंधित पत्रिकाएं आदि पढ़कर विशेषज्ञता हासिल की जा सकती है।

राजनीति जगत में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए राजनैतिक व्यक्तियों, उनकी पार्टी, दल आदि का संपूर्ण ज्ञान साक्षात्कार के द्वारा लिया जाता है। (2) संवाददाता के राजनीति क्षेत्र से जुड़े अनेक स्रोत होना चाहिए जो उन्हें आंतरिक बातों की सही जानकारी दें। (3) अध्ययन करते समय (स्नातक) में हमें राजनीति के विषय चुनने चाहिए।

खण्ड -(ख)

पाठ्य - पुस्तक एवं पूरक पाठ्य - पुस्तक

Question-5

Answer -(क)

भाव सौंदर्य- प्रस्तुत पंक्तियों में श्रीराम का सीता जी एवं लक्ष्मण के साथ वनवास पर जाने के बाद उनकी माता कौशल्या की मनोदशा का मार्मिक वर्णन किया गया है। कौशल्या माता राम की अतीत की स्मृतियों में खो जाती है, किंतु जैसे ही उन्हें वास्तविकता का अहसास होता है कि राम तो वनवास पर चले गए हैं वे एक चित्र के समान स्थिर हो जाती है वे स्तब्ध होकर चित्रलिखित-सी रह जाती है उनके मन में राम के प्रति अत्यंत प्रेम एवं ~~उनका~~ उनके वियोग में रहने का चित्रण किया गया है। तुलसीदास जी कहते हैं कि उस समय तो प्रीति सीखी हुई सी जान पड़ती है अर्थात् प्रेम का असली वर्णन तो किया ही नहीं जा सकता क्योंकि उस अवस्था का वर्णन करते हुए तो वियोगावस्था में प्राण ही निकल जाए)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

शिल्प सौंदर्य – ① माता कौशल्या का राम के वनवास जाने पर उनकी विरह-वेदना का मार्मिक चित्र किया गया है।

② भाषा ~~अवधी~~ है।

③ करुण ~~एवं~~ रस की अनुभूति है।

④ भाषा सहज एवं सुगम्य है।

⑤ उपमा एवं उत्प्रेक्षा अलंकार का सुंदर चित्रण।

Question 5. Answer (ख).

प्रस्तुत ~~पंक्ति~~ पंक्तियों में रानी नागमती का अपने प्रियतम राजा रत्नसिंह के वियोग का सुंदर एवं मार्मिक चित्रण है। रानी नागमती की वियोग की स्थिति बहुत कष्टमय है। वे कौवों और भौंरों को संबोधित करते हुए कहती हैं कि हे कौवे, भौंरे तुम ~~मेरा~~ मेरा यह संदेश मेरे प्रियतम (राजा रत्नसिंह) को जाकर कह दो कि उनके वियोग में उनकी नायिका (रानी नागमती) विरह की आग में जलकर मर गई हैं और उसी की राख के कारण, धुआँ के कारण हमारा रंग, शरीर काला पड़ गया है। यह नायिका की विरह-पीड़ा को प्रदर्शित करता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question-6

विद्यापति की विरहणी नायिका 'राधा जी' अपने प्रियतम 'श्री कृष्ण' के वियोग में विरह रूपी अग्नि में जल रही है। उनके प्रियतम गोकुल छोड़कर मथुरा चले गए जिससे नायिका को उनका सान्निध्य प्राप्त नहीं हो पा रहा है। नायिका की आँखों से निरंतर अश्रुधारा बहती जा रही है उनकी विरह-पीड़ा बढ़ रही है, वे विरह की अग्नि में दुर्बल होती जा रही है एवं उनका शरीर क्षीण हो रहा है वे केवल अपने प्रियतम के प्रेम के क्षणों को याद कर उस प्रेम रस का पान करना चाहती है। वे अपनी सखियों को प्रेम के पलों में होने वाले सुख का वर्णन करती है। वे प्राकृतिक दृश्य जो संयोग अवस्था होने पर परम सुख देते हैं वियोग की स्थिति में उन्हें वह दृश्य, कोयल की कूक, भौंरों का गुंजन कष्टकारी लग रहा है।

Question- 7

Answer- (क)

शेर लघुकथा में 'शेर' को सत्ताधारी का प्रतीक बताया गया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

और इस सत्ता का प्रतीक है जो जानवरों को (आम जनता) अनेक झूठे वादे करके, नए-नए सपने दिखाकर अपने जाल में फंसा लेती है।

लेखक ने इस कहानी के माध्यम से आज के समय के सत्ताधारियों, सह-अस्तित्ववादियों, पूंजीपति वर्ग, सरकार के ढोंग पर प्रहार किया है। जब तक जनता इनका विरोध न करें तब तक वे लोक कल्याण का ढोंग करते हैं परंतु जैसे ही कोई अपने न्याय की मांग कर उन्हें सच्चाई दिखाता है, उनका असली खूंखार रूप सामने आ जाता है और वे लोगों का दमन करने लगते हैं। लोगों के जीवन को स्वर्ग बनाने का झांसा देकर वे केवल अपना जीवन सुखी बनाते हैं। यह कहानी शासन व्यवस्था पर एक करारी चोट है।

Answer - (ख)

प्रकृति भी, लोगों के विस्थापन होने पर उनकी जमीनों को छीनने पर दुख प्रकट करती है इसका जीवंत उदाहरण सिंगरौली गांव में देखा जा सकता था। जैसे ही यह खबर आई की अमरौली प्रोजेक्ट के लिए कई गांव उजाड़ दिए जाएंगे, अमझर गांव भी सूख गया। जिन वृक्षों से आम झड़ते हैं, सदा हरे-भरे रहते थे अब उनपर सूनापन छा गया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रकृति का मनुष्य के बिना और मनुष्य का प्रकृति के बिना अस्तित्व नहीं है दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

सिंगरौली से लोगों के विस्थापन का कारण औद्योगिकरण था। सिंगरौली खनिज संसाधनों, उपजाऊ मृदा, वन्य-जीवों, वृक्षों से हरा-भरा क्षेत्र था जिसे बैकुंठ कहा जाता था। यही अपार संपदा उसके लिए विनाश का कारण बनी।

Question-8

'पहचान' लघुकथा के आधार पर राजा को अंधी, बहरी, और गूंगी प्रजा पसंद आती है जो न देख सके, न बोल और नहीं सुन सके। तात्पर्य यह है कि राजा केवल अपना विकास चाहता है वह ~~अपनी~~ अपने विपक्ष में राय नहीं चाहता जो निरंकुश शासन व्यवस्था है।

राजा को ऐसी प्रजा इसलिए पसंद आती है क्योंकि वह बेरोकटोक अपने मनमाने ढंग से शासन करे और प्रजा का शोषण कर केवल अपने हित की ओर अग्रसर हो यह लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्रतीक नहीं है। इससे केवल राजा अपना जीवन सुखमय और धनाढ्य बनाता है। वह राज्य के विकास पर ध्यान न देकर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

केवल अपने विकास को आगे बढ़ाता है। यह निरंकुशता, लालचीपन का चित्रण करती है।

Question- 9

Answer-(क)

मालवा धरती गहन गंभीर, डग-डग रोटी पग-पग नीर का आशय यह है कि मालवा प्रदेश की धरती, मृदा, वहाँ की संस्कृति, वनस्पति, संसाधन एक आदर्श है। मालवा के प्राचीन लोगों ने प्रकृति के साथ जो संतुलन स्थापित किया था वह प्रशंसनीय था वे अपनी प्राकृतिक संपत्ति का दोहन न कर उसे संरक्षित करते थे जिसके कारण कभी संकट का सामना नहीं करना पड़ता था। वहाँ जगह-जगह पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। खाद्य संसाधनों की कोई कमी नहीं थी यह धरती गहन थी। हर तरफ झील, तालाब, नदियाँ, हरे-भरे खेत, लहलहाती फसलें वनस्पतियाँ और प्राकृतिक दृश्य थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer — (म)

'अपना मालवा खाऊ - उजाड़ू सभ्यता' पाठ में जब लेखक राजस्थान से मालवा के प्रदेश की सीमा में प्रवेश करता है तो प्राकृतिक सौंदर्य का मनोरम दृश्य देख देखकर आनंदित हो जाता है। उगते सूरज की निथरी धूप राजस्थान में रह जाती है अर्थात् मालवा में सूरज की रोशनी आना कम हो जाती है। चारों ओर एक अंधेरा सा छाया था, आसमान काले बादलों से घिरा था। अर्थात् यहां वर्षा ऋतु का मौसम था चौमासा अभी गया नहीं था। लेखक मालवा की प्रत्येक वस्तु से परिचित था। वहां की मृदा, ताल-तलैया, खेतों में लहलहा रही फसलें, सुगंधित हवा, फूलों की खुशबू, से उसका मन प्रसन्न हो गया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

खण्ड – (क)

Question-2 (b)

अशोक कुमार
वेलफेयर एसोसिएशन अध्यक्ष
नई दिल्ली
2 मई 2022
सेवा में
सचिव
नगर विकास प्राधिकरण
नई दिल्ली
विषय : सोसायटी के पास स्थित पार्क के सौन्दर्यीकरण हेतु।
महोदय
सविनय निवेदन है कि मैं जागृति वेलफेयर एसोसिएशन का अध्यक्ष आपका ध्यान मेरे सोसायटी के पास स्थित पार्क के सौन्दर्यीकरण हेतु आकृष्ट करवाना चाहता हूं। यह पार्क विगत 2 वर्षों से निर्मित किया गया है परंतु वहाँ का वातावरण स्वच्छ न होने सौंदर्यीकरण न होने से उसका उपयोग नहीं किया जा रहा है। वहाँ

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जो वृक्ष, पेड़-पौधे लगाए गए थे वे ध्यान न दे पाने के कारण सूख गए हैं। वहाँ बच्चों के झूले आदि की भी कमी है जिस वजह से बच्चे पार्क का आनंद नहीं उठा पाते हैं। पार्क के सामने कूड़े के ढेर लगे रहते हैं, पार्क में गंदगी देखने को मिलती है, जो देखने में सुखमय नहीं लगता। यदि पार्क में नियमित साफ़-सफाई, वृक्षारोपण, नए झूले आदि लगा दिए जाए तो उसका सही उपयोग किया जाने लगेगा।

आपसे ~~कि~~ सविनय निवेदन है कि कृपया इस विषय पर ध्यान देते हुए कई उपाय एवं कदम उठाए जाएं। आपकी अति कृपा होगी।

भवदीय
~~अक~~ अशोक कुमार

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question - 1. (क)

बिन पानी सब सून

प्राचीन समय से एक कहावत सुनी आ रही है - 'बिन पानी सब सून' हमारे पूर्वज अपनी आने वाली पीढ़ी को यह कहावत एवं इसका महत्व बताते आए हैं। परंतु प्रश्न केवल कहावत सुनने का नहीं, इसे समझने का भी है। वास्तव में, 'बिन पानी सब सून'। जल मानव-जीवन का एक अभिन्न अंग है जिसके बिना मानव-जीवन, प्रकृति की कल्पना नहीं की जा सकती। जल हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा है, जिसके बिना जीवित नहीं रहा जा सकता। आज के युग में जल का महत्व जानना अत्यंत आवश्यक है।

जल हमारे दैनिक जीवन के क्रियाकलापों में उपयोग होता है। हमारे पृथ्वी का अधिकतर भाग जल से घिरा है परंतु उपयोग में लाए जाने वाले जल की मात्रा घट रही है। हम पानी पीते हैं जिससे हम जीवित रह पाते हैं। जल का उपयोग विद्युत बनाने में, भोजन पकाने में, नहाने में, पेड़-पौधों को देने में किया जाता है। इसलिए इसका उपयोग बहुत अत्यधिक मात्रा में होता है। अगर जल न हो तो ये सभी क्रियाविधियों पर विराम लग जाए।

आज के युग में, जल संकट का खतरा पैदा होता जा रहा है जिसका मुख्य कारण उसका असुव्यवस्थित ढंग से उपयोग

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

न करना है। जल का अंधाधुंध अनावश्यक उपयोग जल की कमी को जन्म दे रहा है। मानव अपनी आवश्यकता से अधिक लालची तरीके से इसको बर्बाद कर रहा है। परंतु क्या हमने भविष्य में बिना जीवन की कल्पना की है। आज प्रकृति को जो नुकसान मानव पहुँचा रहा है जिससे वर्षा का असमय होना, सूखा होना, अकाल पड़ने जैसी गंभीर आपदाओं का सामना हमें करना ही पड़ेगा। बिना पानी के वनस्पति नष्ट हो जाएगी, खेतों में फसलें नहीं होगी, मनुष्य की मृत्यु प्यास से मृत्यु होने लगेगी क्योंकि 'जल ही जीवन है।' इस बात को मनुष्य जितना जल्दी समझेगा उसका उतना ही भला होगा। हमें संकल्प करने की आवश्यकता है हम जल को संरक्षित करें उसका अतिरि अनावश्यक उपयोग करना बंद कर दें यही अच्छे नागरिक होने की पहचान कराता है एवं भावी पीढ़ी को जल के संकट का सामना न करने पड़े हमें इसलिए हमें वर्तमान पीढ़ी को इस जिम्मेदारी, संकल्प का निर्वहन करना है।